International Journal of Arts & Education Research

ISSN 2278-9677

Email:-info@ijaer.org

July 2018

www.ijaer.org

मृदृला सिन्हा के कथा–साहित्य में सामाजिक समस्याएं

Dr. Navneeta Bhatia
Independent Research Scholar
Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha (CHENNAI)

सार–

बहुमुखी प्रतिभा की धनी मृदुला सिन्हा का जन्म बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के छपरा गांव में 27 नवम्बर 1942 में हुआ था। विद्यार्थी जीवन से ही साहित्यिक गतिविधियों तथा सृजनात्मक लेखन के प्रति इनकी रूचि विकसित हो गई। भारतीय समाज की बदलती हुई परिस्थितियों में आम आदमी विशेषतया महिलाओं की सामाजिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याएं और संदर्भ इनके रचनात्मक लेखन के मुख्य सरोकार हैं। इन्होंने मानव जीवन की समस्याओं को बेबाकी से अभिव्यक्त किया। समाज में व्याप्त बुराइयां, भ्रष्टाचार, दहेज प्रथा, वेश्यावृति, अशिक्षा, अवसरवादिता, सिद्धांतहीनता, झूठ–फरेब, भूखमरी, गरीबी, बेरोजगारी आदि अनेक समस्याओं पर मृदुला सिन्हा की लेखनी निरन्तर गतिशील है। इनकी रचनाएं न केवल इन समस्याओं से आप्लावित ही नहीं हैं, अपितु इनके समाधानों की ओर भी संकेत करती है। समकालीन हिन्दी कथा साहित्य को दिशा एवं गति देने में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है।

प्रस्तावना–

जब–जब सामाजिक चेतना ने करवट बदली है, उसके अन्तराल में जब–जब उद्वेलन की स्थिति का आविर्भाव हुआ है, तब–तब साहित्य में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। **''समाज और साहित्य का सम्बंध आदि काल से चला आ रहा है। साहित्यकार उसी समाज का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें वह जन्म लेता है। वह अपनी समस्याओं का समाधान और अपने आदर्शों की स्थापना समाज के आदर्शों के अनुरूप ही करता है।''**

मानव समाज बनाता है और समाज मनुष्य के जीवन को गढ़ता है, इसलिए साहित्य के मनुष्यकृत होने के कारण उसमें सामाजिक समस्याओं, भावनाओं और विचारों का अंकन होता

ISSN: 2278-9677

है और इसलिए साहित्य को समाज के दर्पण के नाम से जाना जाता है। साहित्य ही समाज में चेतना पैदा करता है। प्रत्येक लेखन के पीछे साहित्यकार का एक निश्चित उद्देश्य होता है। **"साहित्य व्यक्ति की अभिव्यक्ति है समष्टि के लिए।"** वह किसी आदेश पर लाखों हाथों का एक हाथ की तरह उठ जाना नहीं है, वह है अंतकरण का हजारों–लाखों अंतकरणों में विसर्जित हो जाना। साहित्यकार समाज की विसंगतियों एवं पतनोन्मुख परिस्थितियों को साहित्य में अभिव्यक्त कर लोगों को उनसे अवगत करवाता है। साहित्य और समाज का इतना गहरा सम्बंध है कि दोनों को अलगाना असम्भव है। साहित्य का लक्ष्य या उद्देश्य इसी समाज की सेवा होता है। साहित्य में समाज का वास्तविक चेहरा देखा जा सकता है। साहित्य मानव को भावी जीवन की राह दिखाने वाला दीपक है।

मृदुला सिन्हा के कथा– साहित्य में सामाजिक संदर्भ और उनसे जुड़ी समस्याएं सर्वत्र है। समाज में विद्यमान इन समस्याओां से छुटकारा मिले इसलिए उन्होंने सुधार बताने की भी भरसक चेष्टा है। 'जातिवाद' जाति–व्यवस्था से सम्बन्धित एक प्रमुख सामाजिक समस्या है। मृदुला सिन्हा के उपन्यास 'घरवास' में समाज में फैली इस कुरीति अथवा समस्या का बड़ा ही मार्मिक चित्रण प्रस्तुत हुआ है। उपन्यास का नायक विलोचना निम्न जाति से सम्बंध रखता है। जब वह अपना मकान बनाता है तो उसकी पत्नी कलिया उससे गृह प्रवेश करवाने की जिद्द करती है, तो पत्नी के कहने पर वह पंडित को बुलाने के लिए उसके घर जाता है, जब पंडित को सूचना मिलती है कि कोई यजमान आया है, तो वह दौड़ा–दौड़ा बाहर आता है लेकिन जब पंडित देखता है कि विलोचना आया है तो वह चिल्लाया,

"दूर हट! दूर हट, मुझे हाथ मत लगाना।" विस्मय से विलोचना चार कदम पीछे हट गया। पंडित जी अपने को स्थिर करते हुए कहते है कि, **"कहाँ से चला आ रहा है सुबह–सुबह यात्रा बिगाड़ दी।"**

इस वक्तव्य के माध्यम से लेखिका ने स्पष्ट किया है कि उच्च जाति से सम्बन्ध रखने वाला ब्राह्मण नीच जाति के विलोचना को अशुभ और अपशुकन मानता है। पंडित को यूं डाँटने और गुस्सा करने के पश्चात् भी विलोचना पंडित से आग्रह करता है।

वह समय निकालकर उसके घरवास (गृह प्रवेश) की विधि को सम्पन्न करें, विलोचना

के यह शब्द सुनकर पंडित और भी आग बबूला हो जाता है और कहता है कि, **"भाग जा यहां से। रसाला ! हरामी कहीं का। अब मैं मुसहर के घर पूजा करवाऊंगा। पंजाब जाकर दिमाग खराब हो गया है तुम्हारा। तुम्हारी चमड़ी तो नहीं बदली है। राम, कैसा कलयुग! कैसी कलयुगी सरकार। अब मुसहर भी घरवास करेंगे।"**

यहां लेखिका ने जातिगत भेदभाव से उपजी इस समस्या पर प्रकाश डाला है, साथ ही साथ यह बताया है कि यह वर्ग विभाजन एक स्वस्थ समाज और स्वस्थ परिवेश के लिए सदैव हानिकारक है।

लेखिका ने 'जैसे उडि जहाज को पंछी' नामक कहानी–संग्रह की 'पगली कहीं की' कहानी में लेखिका ने नारी–शोषण का मार्मिक चित्रण उपस्थित किया है। कहानी का पुरूष पात्र राघू बताता है कि इस कहानी की नायिका कस्तूरी को उसका पति और सास मारपीट कर एक विक्षिप्त–सी अवस्था में पहुंचा देते है, जिसके बाद वह घर छोड़कर दर–दर भटकती रहती है और पागल हो जाती है। फिर राह में चलता हर कोई पुरूष उसे अपनी हवस का शिकार बना देता है। राघू रेलवे स्टेशन पर चाय की दुकान चलाता है और कस्तूरी को भी चाय और खाना–खिलाता था। एक दिन जब देर तक वह स्टेशन नहीं आती है तो उसे लगता है कि कही कुछ गलत हुआ है, **"सुबह स्टेशन के रिटायरिंग रूम से निकलते कस्तूरी की चाल देखकर उनका शक सत्य में बदल गया। आखिर किसी दरिंदे की नजर पड़ ही गई कस्तूरी के रंग–रूप पर..... अपनी अग्नि शांत करने भर तक सोया होगा वह उस पगली के साथ।"**

यहां पर लेखिका ने समाज में व्याप्त एक और बुराई तथा एक समस्या का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है।

आधुनिक युग की स्त्री किस प्रकार नित नयी–नयी समस्याओं से जुझती हुई अपने जीवन का निर्वाह कर रही है। **'साक्षात्कार'** कहानी–संग्रह की **'निष्कलंक'** कहानी में लेखिका ने चम्पा नामक नारी पात्र के माध्यम से नारी–शोषण को उजागर किया है। चम्पा एक सूझ–बूझ वाली स्त्री है जिसकी शादी भुलावन नामक पुरूष के साथ कर दी जाती है। चम्पा

अपने गृहस्थ जीवन का ईमानदारी से निर्वाह करती है। इसके विपरीत उसे सदैव ही पति के अत्याचारों का सामना करना पड़ता था। अगर चम्पा उसकी किसी भी बात को मानने में स्वयं को अक्षम पाती तो भुलावन उसे मारता–पीटता था यथा, **"पति का रवैया उसे अच्छा नहीं लगता। उसने काफी समझाया–बुझाया मगर वह नहीं माना। रोज वह ताड़ी पीकर आता, अनाप–शनाप बकता। एक दिन चम्पा की बुलाकी (नथिया) बेचने जा रहा था, उसने ऐतराज किया। हाथापाई की नौबत आ गई। उसने बड़ा पीटा।"**

इस प्रकार मृदुला सिन्हा ने चम्पा के माध्यम से ऐसी नारियों की स्थिति समक्ष रखी है, जो अपने कर्त्तव्‍ य का निर्वाह करते हुए भी पति के निरंकुश व्यवहार का शिकार होती है।

'ज्यों मेंहदी को रंग' नामक उपन्यास में मृदुला सिन्हा ने शालिनी नामक नारी पात्र के माध्यम से समाज की बुराई को चित्रित किया है। शालिनी और राजेश पति–पत्नी है। एक बार दोनों कहीं घूमने जाते है और एक दुघर्टना होती है, जिसमें शालिनी के दोनों पैर कट जाते हैं। राजेश की मां शालिनी को अपने बेटे के लिए अपशगुन मानती है। नाते–रिश्तेदार भी शालिनी का जीवन संवारने के बजाय राजेश की मां को सलाह देते हैं, कि **"राजेश की मां बेटे को समझाओ.......गांव की किसी गरीब लड़की से शादी कर दो, जो उसे भी संभालेगी और खटिया पर पड़ी अपाहिज सौत को भी।"**

यहां पर एक अपाहिज स्त्री की बेबसी का बड़ा सजीव चित्रित किया गया है। जब तक शालिनी शारीरिक रूप से परिपूर्ण थी, तब तक सब रिश्ते–नाते उसके अपने थे, लेकिन आज जब उसे सहारे और साथ ही जरूरत है, तब सब उसे बोझ समझकर अपनी जिंदगी से निकाल फैंकना चाहते हैं। यहां पर लेखिका ने आज के मनुष्य का दूसरे मनुष्य के प्रति व्यवहार दिखाया है कि किस प्रकार आज मानव स्वार्थी और आत्म केन्द्रित होता जा रहा है। आज मानव में कोई मूल्य महत्व नहीं रखता है शलिनी ने फिर भी एक पत्नी का कर्त्तव्य पूरा किया, वह राजेश को शादी के लिए राजी कर अपने आप घर छोड़कर चली जाती है। यहां लेखिका अपाहिज लोगों के लिए पाठकों के मन में संवेदना जागृत करने में सफल रही है।

मृदुला सिन्हा हिन्दी साहित्य की शायद पहली लेखिका है, जिन्होंने इस अछूते विषय

पर लेखनी चलाकर पूरे साहित्य जगत् का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया।

'ज्यों मेंहदी को रंग' उपन्यास में इसी लेखिका ने शालिनी और यूसून खां आदि चरित्रों के माध्यम से विकलांग व्यक्तियों की समस्या को चित्रित किया है। यूनूस मियां ने किसी हादसे में अपनी दोनों टांगें गंवा दी थी। पैरों के कट जाने से यूनूस खां पूर्ण रूप से जिंदगी से निराश हो जाता है और हीनता के भाव से ग्रसित हो जाता है। परिवार से प्राप्त उपेक्षा के कारण उसका यह हीनभाव निरंतर परिपक्व होता जाता है। पत्नी और बच्चे उससे धीरे–धीरे दूर होते चले गए। परिवार में इस तरह का वातावरण तब उसके लिए नहीं था जब वह अपंग नहीं था। तब सब लोगों का व्यवहार उसके लिए कुछ और ही था। आज जब उसे सबके सहारे की आवश्यकता है तो केवल घुटन और अकेलेपन के सिवाय उसके पास कुछ भी न था। इसी घुटन और कुंठा से बचने के लिए उसने मौत को गले लगाने की ठान ली। अब वह आत्महत्या करने की कोशिश करता है तो उस समय का ह्रदयस्पर्शी चित्रण करते हुए लेखिका लिखती है, यूनस मियां उस क्षण पूरी तैयारी से खुदकुशी करने जा रहे थे। दो वर्षों तक अधकटे पांव पर चल कर जितनी अनुभूतियां सुदृढ़ सजग हुई थी, उतनी शायद पूर्ण प्राकृतिक पांव पर चालीस वर्ष चलकर नहीं हो पायी थी... खुदकुशी करने के अनेक रास्तों में सरल, सहज और सुलभ माध्यम उन्हें रेलगाड़ी ही दिखी थी। बाकी अन्य माध्यमों से तो बच निकलने की भी संभावना हो सकती थी। छत्त से फांसी लगाना, किरासिन तेल की व्यवस्था करना उनके जैसे अपंग व्यक्ति के लिए दुष्कर ही था। अपाहिज क्या, सब अंगों से सम्पन्न व्यक्ति भी रेलगाड़ी के नीचे आत्महत्या करना ही बेहतर समझता है।

बेरोजगारी आज भारत की नहीं, अपितु विश्व की एक प्रमुख समस्या बन चुकी है। हमारा युवा वर्ग आज बेकारी की समस्या से कुंठाग्रस्त है। 'अतिशय' उपन्यास में लेखिका ने मशीनीकरकण के युग में आम आदमी के रोजगार को छीनता हुआ दिखाया है। उपन्यास की नायिका शिवानी के नाम पर कपड़े की मिल चलती है। लेखिका ने स्पष्टतः चित्रित किया है कि किस प्रकार मशीनों के प्रयोग से बेरोजगारी को बढ़ावा मिला है, **"अब देखो देश के विभिन्न इलाकों में बुनाई व कढ़ाई के विभिन्न नमूने थे, मणीपुर, असम, उड़ीसा, महाराष्ट्र और बंगाल की कढ़ाई, कांथा और तांतेर कापुर प्रसिद्ध है। हम सुनते आए हैं कि ढाका की मलमल का एक थान अंगूठी से निकल जाता था। लेकिन ढाका में बड़े–बडे मिलों के आ जाने के**

ISSN: 2278-9677
www.ijaer.org

बाद स्थानीय लोक–कलाएं लुप्त होती जा रही थी। इन कलाओं को भी मिलों ने हथिया लिया था। वे बेराजगार हो गए।"

यहां पर लेखिका ने एक तरफ बेरोजगारी की तरफ संकेत किया हे, तो दूसरी ओर देश की संस्कृति को विलुप्त होते दिखाया है। इस प्रकार लेखिका ने यहां बेरोजगारी पर सूक्ष्म रूप से दृष्टिपात किया है।

निष्कर्ष–

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मृदुला सिन्हा ने कथा–संसार मे मानव–जीव की समस्याओं को प्रखरता के साथ उजागर किया है। जाति–पाति की समस्या, नारी–शोषण, नौकरीपेशा नारी की समस्या, विकलांगों की समस्या, बेरोजगारी की समस्या आदि को लेखिका ने बखूबी चित्रित किया है। मृदुला सिन्हा के साहित्य में समाज की विभिन्न समस्याओं का चित्रण मिलता है जो समाज की प्रगति में बाधक बनकर खड़ी है। नारी–जीवन की समस्याओं को भी प्रस्तुत किया गया है। जब तक इस प्रकार की समस्याएं समाज में विद्यमान रहेंगी, तब तक एक स्वस्थ समाज की कल्पना करना भी कठिन है। मृदुला सिन्हा का कथा–साहित्य मानवीय संवेदना की गहरी परतों को उभारने में एक सार्थक संज्ञा प्रदान करने की विराट चेष्टा में रत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1 भगवतशरण अग्रवाल, साहित्य और समीक्षा (पाशर्व प्रकाशन, तिलक मार्ग, अहमदाबाद, प्र0 सं0, 1995), पृ0 91,
2. सच्चिदानन्द, हीरानन्द वात्स्यायन, साहित्य, समाज परिवर्तन और प्रकिया (नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1985), पृ0 85,
3. मृदुला सिन्हा, घरवास (ज्ञान गंगा, चावड़ी बाजार, नई दिल्ली, 2001), पृ0 205,
4. वही, वही, पृ0 28,
5. वही, जैसे उडि जहा जो पंछी (कहानी–संग्रह), पृ0 13
6. वही, साक्षात्कार (कहानी–संग्रह), (प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980), पृ0 152,,
7. वही, ज्यों मेंहदी को रंग (प्रभात प्रकाशन, आसफ अली रोड़, नई दिल्ली, 1981), पृ0 50,
8. वही, वही, पृ0 35.

Copyright@ijaer.org